

17. दादी जी के महावाक्य



हम सब साइलेंस में बैठते हैं। हमारी साइलेंस में यह शुभ भावनार्ये भरी हुई हैं कि विश्व की आत्माओं को शांति प्रदान हो, सुख-शांति वाली दुनिया बनें। याद की यात्रा में सूक्ष्म आवाज़ से परे, संकल्पों से भी परे रहने का सहज अनुभव होता है। जैसे बाबा कहते, बच्चे इस शरीर का भान भी न रहे। इसका ही हरेक को अभ्यास व पुरुषार्थ करना है। यही हमारी आत्मा की अथवा बुद्धि की खुराक है और इससे ही हम अपनी संपन्न स्थिति को पहुँचेंगे। इस सूक्ष्म अभ्यास को हमें बढ़ाते जाना है तभी हम अपनी अंतिम स्थिति को पा सकेंगे। बापदादा भी हमें तत्त्वम् का वरदान देते हैं। हम सबकी बुद्धि में है कि हमें बाप के समान बनना है। तो जितना बाबा ऊँच है उतना हम

उनके समान ऊँच बने हैं? यह रोज़ अपने आप में देखते रहो तो स्वतः ही बाप की सर्वशक्तियों का स्वयं में अनुभव होगा।

जैसे बाबा इन आवाज़ों से परे रहे, हमें भी उन जैसे आवाज़ से परे रहना चाहिए। जितना हम आवाज़ों से परे होते जायेंगे उतना हमारी बुद्धि एक बाबा में सहज निरन्तर टिकी रहेगी। स्व की स्थिति सर्व संकल्पों-विकल्पों से तभी परे रह सकती है जब सर्व प्रकार की रसनार्ये, सर्व संबंधों का सुख एक बाबा से लें। इसके लिए हमें अनेकानेक आवाज़ों से बुद्धि को परे ले जाना है। अगर आवाज़ों से परे नहीं जाते तो यह आवाज़ ही हमें अहम्-वहम् में ले जाती है।

इस समय अंतःवाहक स्थिति का अनुभव हम सबको करना है तो यह अनुभव तभी होगा जब हम सब बातों से परे अर्थात् लाइट रहें। फ़रिश्ता अर्थात् सब प्रकार से लाइट। अगर हम सब बातों से परे नहीं रहते तो स्थिति नीचे आ जाती है।

इस समय सूक्ष्म अहम्-वहम् बहुत है। यही अहम् हरेक की स्थिति को नीचे ले आता है। यह अहम् जब समाप्त हो तब फ़रिश्ता बनें। अहम् की परसेन्टेज हरेक स्वयं में अनुभव करता है। क्योंकि यही सूक्ष्म अहम् बुद्धि को प्युअर, सतोगुणी बनने नहीं देता, उसमें परसेन्टेज हो जाती है। अहम् का भाव होने से जो सूक्ष्म इमप्युअर संकल्प उठते हैं वह बायबेशन में जाते हैं। जब हमारी बुद्धि इस सूक्ष्म अहम्-वहम् के संस्कारों से ऊपर निकल जाती है तो वृत्ति ऐसी बन जाती जैसे कि हम फ़रिश्ता हैं।

ओम् शांति।